परमेश्वर की बुलाहटें

मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार का इतिहास मनुष्यों को परमेश्वर द्वारा बुलाने का इतिहास है। परमेश्वर मनुष्यजाति से प्रेम करता है। इसी प्रेम ने उसे अपने लोगों को ढूंढ़कर अपने लिए बुलाने को विवश किया।

कालान्तर में उसकी बुलाहटें

नूह को जल प्रलय से पूर्व प्रलय के पानी से धोई और शुद्ध की गई पृथ्वी पर रहने के लिए बुलाया गया था (उत्पत्ति 6)। परमेश्वर ने उसको स्पष्ट निर्देश दिए थे और उसने ''परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार'' किया (उत्पत्ति 6:22)। जब परमेश्वर पुकारता है, तो आशीष पाने के लिए मनुष्य को उसकी बात माननी चाहिए।

अब्राम को अपना घर छोड़ने के लिए कहा गया था (उत्पत्ति 12:1-4)। वह मूर्तिपूजा करने वाले लोगों के बीच रहता था। परमेश्वर ने उसे उन लोगों में से निकलने के लिए कहा और ''उस देश [को] ... जो मैं तुझे दिखाऊंगा'' देने की प्रतिज्ञा की। उसे और भी अद्‌भुत आशिषें देने की प्रतिज्ञा की गई थी क्योंकि अब्राम ने परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार किया था। पृथ्वी के घरानों को अन्ततः उसी के द्वारा आशीष मिलनी थी। अब्राम की आज्ञाकारिता में हमें एक शक्तिशाली जाति के आरम्भ का पता चलता है।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिसर से बुलाया था। उन्हें लाने के लिए मूसा को भेजा गया था (निर्गमन 3:10)। अद्‌भुत आशिषें देने की प्रतिज्ञा की गई थी, परन्तु वे आशिषें तभी मिलनी थीं यदि लोग मूसा की अगुआई को मानकर परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार करते। उन्हें अपने आपको मिसर की मूर्तिपूजा से अलग करना था। उनमें से कई लोग सीनै पर्वत के नीचे मूर्तिपूजा करने के कारण ही मर गए थे (निर्गमन 32)।

काफ़ी समय के पश्चात, परमेश्वर ने इस्राएलियों को बाबुल की दासता से बुलाया। सत्तर वर्षों के बाद परमेश्वर ने हारे हुए इस्राएलियों को कनान देश में लौटने की अनुमति दी थी (यिर्मयाह 29:10)। कुस्त्रु ने उन्हें लौटकर पवित्र नगर को फिर से बनाने का फरमान जारी किया (2 इतिहास 36:22, 23)। जरुब्बाबेल, एज्रा, और नहेमायाह की अगुआई में बड़ी संख्या में इस्राएलियों ने अपने देश लौटकर दीवारों को फिर से खड़ा किया और मन्दिर को बनाया।

आज उसकी बुलाहटें

परमेश्वर आज हमें बुलाता है। उसकी बुलाहट का अर्थ हमें अंधकार से रोशनी अर्थात आत्मिक राज्य में बुलाना है।

हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। यह कोई चमत्कारी या रहस्यपूर्ण बुलाहट नहीं है। बल्कि, यह बुलाहट परमेश्वर के वचन के द्वारा मिलती है। हमें किसी से किसी में से बुलाया जाता है:

> पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो (1 पतरस 2:9)।

> तुम्हारे चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हों, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)।

दूसरी आयतें भी इस बुलाहट का वर्णन करती हैं। प्रेरितों 2:39 कहता है कि यह परमेश्वर की बुलाहट है। हमें संत अर्थात पवित्र लोग बनने के लिए बुलाया गया है (1 कुरिन्थियों 1:2)। यह स्वर्गीय बुलाहट है (इब्रानियों 3:1)।

हमारे नये नियम में एक शब्द है जिसका मूल अर्थ है ''बुलाए हुए।'' वह शब्द *चर्च* अर्थात *कलीसिया* है। मूल यूनानी में वह *इकलीसिया* है। यह दो शब्दों *इक* जिसका अर्थ ''बाहर'' और *केलियो* जिसका अर्थ ''बुलाना'' है, का मेल है। ''कलीसिया'' शब्द का मूल अर्थ है ''बुलाए हुए लोग''। जब हम प्रभु की कलीसिया कहते हैं तो हमारा भाव ''बुलाए हुए वे लोग जिनका सम्बन्ध प्रभु से है'' होता है। इससे यह प्रश्न नहीं रहना चाहिए कि किसी को प्रभु की कलीसिया का सदस्य होना अनिवार्य है या नहीं। क्या बुलाया जाना अनिवार्य है ? निस्संदेह! यदि किसी को अंधेरे में से रोशनी में बुलाया गया है, तो वह *बुलाए हुए लोग* ... अर्थात *कलीसिया* का एक भाग है।

2 पतरस 1:5-11 में, हमें ''अपने बुलाए जाने और चुन लिए जाने'' के ढंग का पता चलता है। उस भाग में पतरस ने कुछ विशेष मसीही अनुग्रहों अर्थात सद्‌गुण, विश्वास, समझ, संयम, धीरज, भक्ति, भाई चारे की प्रीति, और प्रेम को विस्तार से बताया है। उसने कहा है, ''यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे'' (2 पतरस 1:10)। हां, एक मसीही के लिए अनुग्रह से गिरना सम्भव है। हमें अपने बुलाए जाने को दृढ़ और पक्का करने के लिए कोशिश करनी चाहिए।